INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान

चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी (4th ग्रेड)

(राजस्थान कर्मचारी चयन आयोग (RSSB)





भाग – 1

सामान्य हिंदी + अंग्रेजी + विज्ञान + कंप्यूटर

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**राजस्थान चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी परीक्षा (4th ग्रेड)**" को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है। ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान कर्मचारी चयन आयोग** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा **"चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी भर्ती परीक्षा"** में पूर्ण संभव मदद करेंगें।*

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है। अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

WhatsApp करें - https://wa.link/0hjokf

Online Order करें - https://shorturl.at/Q6pjL

मूल्य : ₹	**संस्करण : नवीनतम**

	हिन्दी	
क्र.सं.	अध्याय	पेज नंबर
1.	संज्ञा	1
2.	सर्वनाम	4
3.	विशेषण	5
4.	क्रिया एवं विशेषण	7
5.	तद्भव एवं तत्सम, देशज, विदेशज	10
6.	सन्धि और सन्धि विच्छेद	12
7.	समास - विग्रह	16
8.	उपसर्ग	25
9.	प्रत्यय	26
10.	पर्यायवाची शब्द	30
11.	विलोम शब्द	34
12.	वाक्यांश के लिए एक सार्थक शब्द	41
13.	शब्द - शुद्धि	47
14.	वाक्य - शुद्धि	51
15.	काल एवं इसके प्रकार	55
16.	मुहावरे और लोकोक्तियाँ	56
17.	अंग्रेजी के पारिभाषिक शब्दों के समानार्थक हिन्दी शब्द	64
18.	कार्यालयी पत्र	75
	English	
1.	Time And Tenses	79
2.	Active / Passive Voice of Verb	91
3.	Direct & Indirect Narration	98
4.	Transformation of Sentences	103

5.	Correction Of Sentences	112
6.	Words Wrongly Used	117
7.	Article and Determiners	120
8.	Preposition	127
9.	Punctuation	139
10.	Translation from Hindi to English	141
11.	Glossary Of Offical, Technical Terms	144
	दैनिक विज्ञान	
1.	भौतिक और रासायनिक परिवर्तन	145
2.	धातु, अधातु एवं इनके प्रमुख यौगिक	147
3.	प्रकाश का परावर्तन व इसके नियम	159
4.	आनुवंशिकी	164
5.	मानव शरीर की संरचना	170
	कम्प्यूटर	
1.	कम्प्यूटर का बुनियादी ज्ञान	207
2.	कम्प्यूटर मैमोरी	210
3.	इनपुट और आउटपुट युक्तियां	211
4.	कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर	219
5.	वर्ड प्रोसेसिंग सॉफ्टवेयर	225
6.	स्प्रेड शीट सॉफ्टवेयर	229
7.	माइक्रोसॉफ्ट पॉवर प्वॉइंट	233
8.	इंटरनेट	235

हिन्दी

अध्याय – 1

संज्ञा

संज्ञा (Noun) की परिभाषा :-

संज्ञा उस विकारी शब्द को कहते हैं, जिससे किसी विशेष वस्तु, भाव और जीव के नाम का बोध हो, उसे संज्ञा कहते हैं

दूसरे शब्दों में- किसी प्राणी, वस्तु, स्थान, गुण या भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं ।

जैसे – प्राणियों के नाम- मोर, घोड़ा, अनिल, किरण जवाहरलाल नेहरू आदि ।

वस्तुओं के नाम- अनार ,रेडियों , किताब, संदूक, आदि।

स्थानों के नाम- कुतुबमीनार , नगर, भारत, मेरठ आदि

भावों के नाम- वीरता , बुढ़ापा, मिठास आदि

यहाँ 'वस्तु ' शब्द का प्रयोग व्यापक अर्थ में हुआ है, जो केवल वाणी और प्रदार्थ का वाचक नहीं ,वरन उनके धर्मों का भी सूचक है।

साधारण अर्थ में 'वस्तु ' का प्रयोग इस अर्थ में नही होता। अतः वस्तु के अंतर्गत प्राणी, प्रदार्थ और धर्म आते हैं। इन्हीं के आधार पर संज्ञा के भेद किये गये हैं।

संज्ञा के भेद

संज्ञा के पाँच भेद होते हैं-

(1) व्यक्तिवाचक (Proper noun)
(2) जातिवाचक (Common noun)
(3) भाववाचक (Abstract noun)
(4) समूहवाचक (Collective noun)
(5) द्रव्यवाचक (Material noun)

(1) व्यक्तिवाचक संज्ञा :-जिस शब्द से किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु या स्थान के नाम का बोध हो उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं ।

जैसे-

व्यक्ति का नाम-रवीना , सोनियां गाँधी , श्याम, हरि, सुरेश , सचिन आदि ।

वस्तु का नाम- कर , टाटा चाय, कुरान , गीता , रामायण आदि ।

स्थान का नाम-ताजमहल, कुतुबमीनार , जयपुर आदि।

दिशाओं के नाम- उत्तर , पश्चिम , दक्षिण , पूर्व ।

देशों के नाम- भारत , जापान , अमेरिका, पाकिस्तान , बर्मा ।

राष्ट्रीय जातियों के नाम- भारतीय , रूसी, अमेरिकी।

समुन्द्रों के नाम- काला सागर , भूमध्य सागर , हिन्द महासागर , प्रशान्त महासागर।

नदियों के नाम- गंगा, ब्रह्मपुत्र, बोल्गा, कृष्णा कावेरी , सिन्धु ।

पर्वतों के नाम - हिमालय, विन्ध्याचल, अलकनंदा, कराकोरम ।

नगरों चोको और सड़कों के नाम वाराणसी , गया,चाँदनी चौक, हरिसन रोड़, अशोक मार्ग ।

पुस्तकों तथा समाचारों के नाम- रामचरित मानस, ऋग्वेद , धर्मयुग, इण्डियन नेशन, आर्यावर्त ।

ऐतिहासिक युद्धों और घटनाओं के नाम- पानीपत की पहली लड़ाई, सिपाही -विद्रोह, अक्तूबर –क्रांति ।

दिनों महीनों के नाम- मई, अक्टूबर ,जुलाई, सोमवार , मंगलवार ।

त्योहारों उत्सवों के नाम- होली, दीवाली, रक्षाबन्धन, विजयादशमी ।

(2) जातिवाचक संज्ञा :- जिस शब्द से एक जाति के सभी प्राणियों अथवा वस्तुओं का बोध हो, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।

बच्चा , जानवर , नदी, अध्यापक, बाजार , गली, पहाड़, खिड़की, स्कूटर आदि शब्द एक ही प्रकार प्राणी, वस्तु और स्थान का बोध करा रहे हैं। इसलिए ये जातिवाचक संज्ञा' हैं।

जैसे - लड़का, पशु-पक्षियों वस्तु , नदी , मनुष्य, पहाड़ आदि।

'लड़का' से राजेश, सतीश, दिनेश आदि सभी 'लड़कों का बोध होता है।

'पशु-पक्षियों से गाय, घोड़ा, कुत्ता आदि सभी जाति का बोध होता है।

'वस्तु' से मकान, कुर्सी, पुस्तक, कलम आदि का बोध होता है।

'नदी' से गंगा यमुना, कावेरी आदि सभी नदियों का बोध होता है।

मनुष्य' कहने से संसार की मनुष्य-जाति का बोध होता है।

'पहाड़' कहने से संसार के सभी पहाड़ों का बोध होता है।

(3) भाववाचक संज्ञा:-

थकान, मिठास, बुढ़ापा, गरीबी , आजादी , हँसी , चढ़ाई, साहस, वीरता आदि शब्द-भाव, गुण, अवस्था तथा क्रिया के व्यापार का बोध करा रहें हैं। इसलिए ये 'भाववाचक संज्ञाएँ हैं।

इस प्रकार-जिन शब्दों से किसी प्राणी या पदार्थ के गुण, भाव, स्वभाव या अवस्था का बोध होता है, उन्हें भाववाचक संज्ञा कहते हैं।

जैसे- उत्साह, ईमानदारी, बचपन, आदि । इन उदाहरणों में 'उत्साह' से मन का भाव है। 'ईमानदारी' से गुण का बोध होता है। 'बचपन' जीवन की एक अवस्था या दशा को बताता है। अतः उत्साह, ईमानदारी, बचपन, आदि शब्द भाववाचक संज्ञाए हैं। हर प्रदार्थ का धर्म होता है। पानी में शीतलता, आग में गर्मी, मनुष्य में देवत्व और

पशुत्व इत्यादि का होना आवश्यक है। पदार्थ का गुण या धर्म प्रदार्थ से अलग नही रह सकता। घोड़ा है, तो उसमें बल है, वेग है और आकार भी है। व्यक्तिवाचक संज्ञा की तरह भाववाचक संज्ञा से भी किसी एक ही भाव का बोध होता है। 'धर्म, गुण, अर्थ और 'भाव' प्रायः पर्यायवाची शब्द हैं। इस संज्ञा का अनुभव हमारी इन्द्रियों को होता है और प्रायः इसका बहुवचन नहीं होता।

भाववाचक संज्ञाएँ बनाना:-

भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण जातिवाचक संज्ञा, विशेषण, क्रिया, सर्वनाम और अव्यय शब्दों से बनती हैं। भाववाचक संज्ञा बनाते समय शब्दों के अंत में प्रायः पन, त्व, ता आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

(1) जातिवाचक संज्ञा से भाववाचक संज्ञा बनाना :-

जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा	जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा
स्त्री-	स्त्रीत्व	भाई-	भाईचारा
जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा	जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा
मनुष्य-	मनुष्यता	पुरुष-	पुरुषत्व, पौरुष
शास्त्र-	शास्त्रीयता	जाति-	जातीयता
पशु-	पशुता	बच्चा-	बचपन
दनुज-	दनुजता	नारी-	नारीत्व
पात्र-	पात्रता-	बूढा-	बुढ़ापा
लड़का-	लड़कपन	मित्र-	मित्रता
दास-	दासत्व	पण्डित-	पण्डिता
अध्यापक-	अध्यापन	सेवक-	सेवा

(2) विशेषण से भाववाचक संज्ञा बनाना:-

विशेषण	भाववाचक संज्ञा	विशेषण	भाववाचक संज्ञा
लघु-	लघुता, लघुत्व, लाघव	वीर-	वीरता, वीरत्व
एक-	एकता, एकत्व	चालाक-	चालाकी
खट्टा-	खटाई	गरीब	गरीबी
गंवार	गंवारपन	पागल	पागलपन
बूढा	बुढ़ापा	मोटा	मोटापा
नबाव	नबाबी	दीन	दीनता,दैन्य
बड़ा	बड़ाई	सुंदर	सौंदर्य, सुंदरता
भला	भलाई	बुरा	बुराई
ढीठ	ढिठाई	चौड़ा	चौड़ाई

लाल	सरलता सारल्य	आवश्यकता	आवश्यकता
परिश्रमी	परिश्रम	अच्छा	अच्छाई
गंभीर	गंभीरता, गांभीर्य	सभ्य	सभ्यता
स्पष्ट	स्पष्टता	भावुक	भावुक
अधिक	अधिकता, आधिक्य	अधिक	अधिकता
सर्द	सर्दी	कठोर	कठोरता
मीठा	मिठास	चतुर	चतुराई
सफेद	सफेदी	श्रेष्ठ	श्रेष्ठता
मूर्ख	मूर्खता	राष्ट्रीय	राष्ट्रीयता
खोजना	खोज	सीना	सिलाई
जीतना	जीत	रोना	रुलाई
लड़ना	लड़ाई	पढ़ना	पढ़ाई
चलना	चाल,चलन	पीटना	पिटाई
देखना	दिखावा, दिखावट	समझना	समझ
सींचना	सिंचाई	पड़ना	पड़ाव
पहनना	पहनावा	चमकना	चमक
लूटना	लूट	जोड़ना	जोड़
घटना	घटाव	नाचना	नाच
बोलना	बोल	पूजना	पूजन
झूलना	झूला	जोतना	जुताई
कमाना	कमाई	बचना	बचाव
रुकना	रुकावट	बनना	बनावट
मिलना	मिलावट	बुलाना	बुलावा
भूलना	भूल	छापना	छापा, छपाई
बैठना	बैठक, बैठकी	बढ़ना	बाढ़
घेरना	घेरा	छीकंना	छीकं
फिसलना	फिसलन	खपना	खपत
रँगना	रंगाई, रंगत	मुसकारना	मुसकान
उड़ना	उड़ान	घबराना	घबराहट
मुड़ना	मोड़	सजाना	सजावट
चढ़ना	चढाई	बहना	बहाव
मारना	मार	दौंड़ना	दौंड़
गिरना	गिरावट	कूदना	कूद
अंत	अंतिम,अंत्य	अर्थ	आर्थिक
अवश्य	आवश्यक	अंश	आंशिक
अभिमान	अभिमानी	अनुभव	अनुभवी
इच्छा	ऐच्छिक	इतिहास	ऐतिहासिक
ईश्वर	इश्वरीय	उपज	उपजाऊ
उन्नति	उन्नत	कृपा	कृपालु
कुल	कुलीन	केंद्र	केंद्रीय
क्रम	क्रमिक	कागज	कागजी

किताब	किताबी	काँटा	कँटीला
कंकड़	कंकड़ीला	कमाई	कमाऊ
क्रोध	क्रोधी	आवास	आवासीय

3. <u>क्रिया विशेषण से भाववाचक संज्ञाः-</u>

मन्द- मन्दी;
दूर- दूरी;
तीव्र- तीव्रता;
शीघ्र- शीघ्रता इत्यादि।

4. <u>अव्यय से भाववाचक संज्ञाः-</u>

परस्पर-पारस्पर्य ;
समीप- सामीप्य;
निकट- नैकट्य;
शाबाश- शाबाशी;
वाहवाह- वाहवाही

(4) <u>समूहवाचक संज्ञा</u> :- जिस संज्ञा शब्द से वस्तुओं के समूह या समुदाय का बोध हो, उसे समूहवाचक संज्ञा कहते हैं।
जैसे- व्यक्तियों का समूह- भीड़, जनता, सभा, कक्षा; वस्तुओंका समूह- गुच्छा, कुंज, मण्डल, घौंद।

(5) <u>द्रव्यवाचक संज्ञा</u> :-जिस संज्ञा से नाप-तौलवाली वस्तु का बोध हो, उसे द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं।
दूसरे शब्दों में- जिन संज्ञा शब्दों से किसी धातु, द्रव या पदार्थ का बोध हो, उन्हें द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं।
जैसे- तांबा, पीतल, चावल, घी, तेल, सोना, लोहा आदि।

संज्ञाओं का प्रयोग
संज्ञाओं के प्रयोग में कभी-कभी उलटफेर भी हो जाया करता है। कुछ उदाहारण यहाँ दिये जा रहे हैं-

(क) <u>जातिवाचक</u> : व्यक्तिवाचक- कभी- कभी जातिवाचक संज्ञाओं का प्रयोग व्यक्तिवाचक संज्ञाओं में होता है। जैसे- 'पुरी' से जगन्नाथपुरी का 'देवी' से दुर्गा का, 'दाऊ' से कृष्ण के भाई बलदेव का, 'संवत्' से विक्रमी संवत् का, 'भारतेन्दु' से बाबा हरिश्चंद्र का और 'गोस्वामी' से तुलसीदासजी का बोध होता है। इसी तरह बहुत- सी योगरूढ़ संज्ञाएँ मूल रूप से जातिवाचक होते हुए भी प्रयोग में व्यक्तिवाचक के अर्थ में चली आती हैं। जैसे- गणेश, हनुमान, हिमालय, गोपाल इत्यादि।

(ख) <u>व्यक्तिवाचक</u>: जातिवाचक- कभी-कभी व्यक्तिवाचक संज्ञा का प्रयोग जातिवाचक (अनेक व्यक्तियों के अर्थ) में होता है। ऐसा किसी व्यक्ति का असाधारण गुण धर्म दिखाने के लिए किया जाता है। ऐसी अवस्था में व्यक्तिवाचक संज्ञा जातिवाचक संज्ञा में बदल जाती है। जैसे- गाँधी अपने समय के कृष्ण थे; यशोदा हमारे घर की लक्ष्मी हैं; तुम कलियुग के भीम हो इत्यादि।

(ग) <u>भाववाचक</u> : जातिवाचक- कभी-कभी भाववाचक संज्ञा का प्रयोग जातिवाचक संज्ञा में होता है। उदाहरण- ये सब कैसे अच्छे पहरावे हैं? यहाँ 'पहरावा' भाववाचक संज्ञा है, किन्तु प्रयोग जातिवाचक संज्ञा में हुआ। 'पहरावे' से 'पहनने के वस्त्र' का बोध होता है। संज्ञा के रूपान्तर (लिंग, वचन और कारक में सम्बन्ध) संज्ञा विकारी शब्द हैं। विकार शब्द रूपों को परिवर्तित अथवा रूपान्तरित करता है। संज्ञा के रूप लिंग, वचन और कारक चिन्हों (परसर्ग) के कारण बदलते हैं।

लिंग के अनुसार
नर खाता है- नारी खाती है।
लड़का खाता है- लड़की खाती है।
इन वाक्यों में 'नर' पुलिंग है और 'नारी' स्त्रीलिंग। 'लड़का' पुलिंग है और 'लड़की' स्त्रीलिंग। इस प्रकार, लिंग के आधार पर संज्ञाओं का रूपान्तर होता है।

वचन के अनुसार
लड़का खाता है- लड़के खाते हैं।
लड़की खाती लड़कियाँ हैं - खाती हैं।
एक लड़का जा रहा है- तीन लड़के जा रहे हैं।
इन वाक्यों में 'लड़का' शब्द एक के लिए आया है और 'लड़के ' एक से अधिक के लिए। 'लड़की' एक के लिए और 'लड़कियाँ' एक से अधिक के लिए प्रयुक्त हुआ है। यहाँ संज्ञा के रूपान्तर का आधार 'वचन' है। 'लड़का' एकवचन है और 'लड़के ' बहुवचन में प्रयुक्त हुआ है।

कारक - चिन्हों के अनुसार
लड़का खाना खाता है- लड़के ने खाना खाया।
लड़की खाना खाती है- लड़कियों ने खाना खाया।
इन वाक्यों में 'लड़का खाता है में 'लड़का' पुलिंग एकवचन है और 'लड़के ने खाना खाया' में भी 'लड़के ' पुलिंग एकवचन है, पर दोनों के रूप में भेद है। इस रूपान्तर का कारण कर्ता कारक का चिन्ह 'ने' है, जिससे एकवचन होते हुए भी 'लड़के ' रूप हो गया है। इसी तरह, लड़के को बुलाओ, लड़के से पूंछो, लड़के का कमरा, लड़के के लिए चाय लाओ इत्यादि वाक्यों में संज्ञा (लड़का-लड़के) एकवचन में आयी है। इस प्रकार, संज्ञा बिना कारक-चिन्ह के भी होती है और कारक चिन्हों के साथ भी। दोनों स्थितियों में संज्ञाएँ एकवचन में अथवा बहुवचन में प्रयुक्त होती है।

<u>उदाहरणार्थ</u>
बिना कारक-चिन्ह के - लड़के खाना खाते हैं। (बहुवचन)
लड़कियाँ खाना खाती हैं। (बहुवचन)
कारक-चिन्हों के साथ- लड़कों ने खाना खाया।
लड़कियों ने खाना खाया।
लड़कों से पूछो।
लड़कियों से पूछो।
इस प्रकार, संज्ञा का रूपान्तर लिंग, वचन और कारक के कारण होता है ।

अध्याय – 5

तद्भव एवं तत्सम, देशज, विदेशज

तत्सम एवं तद्भव

शब्द – भेद

बनावट के आधार पर

- रूढ़
- यौगिक
- योग रूढ़

उत्पत्ति के आधार पर

- तत्सम
- तद्भव
- देशज
- विदेशी
- संकर

परम्परागत तत्सम
जो शब्द संस्कृत वाङ्मय में उपलब्ध हैं, वें परंपरागत तत्सम कहे जाते हैं।

निर्मित तत्सम शब्द
" जो शब्द नए विचारों और व्यापारों की अभिव्यक्ति करने के लिए संस्कृत के व्याकरण के अनुसार समय – समय पर बना लिए गए हैं "

1. तत्सम : ' तत्सम ' (तत् + सम) शब्द का अर्थ है – 'उसके समान' अर्थात् संस्कृत के समान। हिन्दी में अनेक शब्द संस्कृत से आए हैं और आज भी उसी रूप में प्रयोग किए जा रहे हैं। अतः संस्कृत के ऐसे शब्द जिसे हम ज्यों- का –त्यों प्रयोग में लाते हैं, तत्सम शब्द कहलाते हैं ; जैसे – अग्नि,वायु, माता, पिता, प्रकाश , पत्र सूर्य आदि।
2. तद्भव शब्द – 'तद्भव ' शब्द का अर्थ है- 'उससे होना'; अर्थात् वें शब्द जो ' स्त्रोत भाषा ' के शब्दों से विकसित हुए हैं। चूँकि ये शब्द संस्कृत से चलकर पालि – प्राकृत अपभ्रंश से होते हुए हिन्दी तक पहुंचे हैं , अत : इनके स्वरूप में परिवर्तन आ गया है , जैसे – 'दही' शब्द 'कान्ह' शब्द (कृष्ण) से विकसित होकर हिन्दी में आए हैं ऐसे शब्दों को **'तद्भव शब्द'** कहा जाता है।

तद्भव	तत्सम
सोना	स्वर्ण
सोलह	षोड़स
कूची	कूर्चिका
मयूर	मोर
पिय	प्रिय
किवाड़	कपाट
कान	कर्ण

खेत	क्षेत्र
घर	गृह
गाय	गौ
बात	वार्ता
चंदा	चन्द्रमा
अमिय	अमृत
माता	मातृ
काठ	काष्ठ
लोहा	लौह
बन्दर	वानर
दूध	दुग्ध

3. **देशज / देसी :** 'देशज' (देश+ज) शब्द का अर्थ है- देश में जमा। अतः ऐसे शब्द जो क्षेत्रीय प्रभाव के कारण परिस्थिति व आवश्यकतानुसार बनकर प्रचलित हो गए हैं, देशज या देशी शब्द कहलाते हैं ; जैसे – थैला, गड़बड़, टट्टी , पेट , पगड़ी , लोटा ,टाँग , ठेठ आदि।
4. **विदेशज / विदेशी / आगत :** ' विदेशज ' (विदेश+ज) शब्द का अर्थ है –' विदेश में जन्मा ' । 'आगत' शब्द का अर्थ है आया हुआ हिन्दी में अनेक शब्द ऐसे हैं जो हैं तो विदेशी मूल के, पर परस्पर संपर्क के कारण यहाँ प्रचलित हो गए हैं। अतः अन्य देश की भाषा से आए

हुए शब्द विदेशज शब्द कहलाते हैं विदेशज शब्दों में से कुछ को ज्यो-का-त्यों अपना लिया गया है (ऑर्डर, कम्पनी, कैम्प, क्रिकेट इत्यादि) और कुछ को हिन्दीकरण (तद्भवीकरण) कर के अपनाया गया है।

(ऑफिसर > अफसर, लैंनटर्न > लालटेन, हॉस्पिटल > अस्पताल, कैप्टेन > कप्तान, गोडाउन > गोदाम, जेन्युअरि > जनवरी) इत्यादि।

अरबी शब्द

अक्ल, अज़ब, अजाएब, अजीब, असर, अहमक, अल्ला, अदा, आदत, आदमी, आखिर, आसार, इलाज, इनाम, इस्तीफा, इज्जत, इजलास, इमारत, .ईमान, उम्र, एहसान, औरत, औलाद, औसत, कर्ज, कमाल, कब्र, कदम, कसूरं, कसर, कसम, कसरत, किला, किस्त, किंस्मत, किस्सा, किताब, कुर्सी, खत, खत्म, खबर, खराब, ख्याल, गरीब, गैर, जलसा, जिस्म, जाहिल, जहाज, जवाब, जनाब, जालिम, जिहन, तकदीर, तकिया, तरफ, तमाम, तकाजा, तुर्की, तजुरबा, तमाशा, तारीख, दगा, दफा, दफ्तर, दवा, दल्लाल, दावा, दान, दावत, दाखिल, दिक,दीन, दुआ, दुकान, नकद, नकल, नहर, नशा, नतीजा, चाल, फकीर, फायदा, फैसला, बाकी, मवाद, मदद, मल्लाह, मजबूर, मरंज्ी, मशहूर, मजमून, मतलब, मालूम, मामूली, मात, मानी, मिसाल, मुदई, मुसाफिर, मुंसिफ, मुकदमा, मौका, मौलवी, मौसम, यतीम, राय, लफ्ज, लहजा, लायक, लिफाफा, लियाकत, लिहाज, वकील, वहम, वारिस, शराब, हक, हद, हरामी, हमला, हवालात, हाजिर, हाशिया, हल, हाकिम, हिसाब, हिम्मत, हैजा, हौसला इत्यादि।

फारसी शब्द

अदा, अफसोस, आतिशबाजी, आबरू, आबदार, आमदनी, आराम, आफत, आवाज, आईना, उम्मीद, कद (कद्द भी), किशमिश, कुश्ती, कमीना, कबूतर कूचा, खुद, खामोश, खुश, खुराक, खूब, खरगोश, गज, गर्द,, गुम, गल्ला, गोला, गुलबन्द, गरम, गिरह, गवाह, गुल, गुलाब, गोश्त, चश्खा, चश्मा, चादर चाबुक, चिराग, चेहरा, चूँकि, चाशनी, जहर, जंग, जबर, जादू, जिन्दगी, जागीर, जान, जीन, जुरमाना, जोर, जिगर, जोश, तबाह, तनख्वाह, तरकश, तमाशा, ताक, ताजा, तीर, तेज, दरबार, दंगल, दस्तूर, दीवार, दुकान, दिलेर, देहात, दवा, दिल नापसंद, नाव, नामर्द, पलक, पलंग, पारा, पुल, पेशा, पैमाना, बहरा बीमार, बेहूदा, बेवा, बेरहम, मजा, मलीदा, मरहम, मलाई, मादा, माशा, मुफ्त, मीना, मुर्गा, मोर्चा, याद, यार, रंग, राह, रोगन, लगाम, वापिस शादी, शोर, सरकार, सरदार, सरासर, सितार, इत्यादि।

पुर्तगाली शब्द

Alcatro	अलकतरा
Altionet	आल्पिन
Almario	अलमारी
Bolde	बाल्टी
Fita	फीता
Tobacco	तम्बाकू

संकर (मिश्रित) शब्द

हिन्दी में ऐसे भी शब्द हैं, जो दो भाषाओं के शब्दों के मेल से बन गये हैं; नीचे देखें

(क) संस्कृत और हिन्दी के शब्दों के मेल से निर्मित- उपं

बोली, भोजन-गाड़ी, रात्रि-इउड़ान आदि। -

(ख) संस्कृत और फ़ारसी के शब्दों के मेल से निर्मित- विज्ञापनबाज़ी, छायादार, लोकशाही आदि।

(ग) फारसी और हिन्दी- भाषा के शब्दों के मेल से निर्मित-कमर-पट्टी, ख़रीदना, जेब-कतरा, बेडौल आदि।

(घ) अरबी और हिन्दी-अख़बारवालां, अजाएबघर हवा-चक्की, मालगाड़ी, किताबंघर, कलम-चोर "

(ड़) तुर्की और हिन्दी-तोप-गाड़ी, तोप-तलंवार आदि।

(च) अरबी और फारसी-अक़लमन्दं गोताख़ोर, तहसीलदार फ़िजूल-ख़र्च आदि।

(छ) हिन्दी और फारसी-कटोरदान, चमकंदार, मसालेदार किरायेदार, छापाख़ानां, थानेदार, पंचायतनामा आदि।

(ज) अँगरेज़ी और हिन्दी-टिकट-घेर/ डबल रोटी, रेलगाड़ी

अलार्म-घड़ी, सिनेमा-घर, रेलवे-भाड़ा, पुलिस-चोकी, डाक-घर आदि।

(झ) हिन्दी और अँगरेज़ी-कपड़ा-मिल, जाँच-कमीशन, लाठी-चार्ज आदि।

(ञ) अँगरेज़ी और फारसी- जेलखाना, सील-बन्द आदि।

अंग्रेजी शब्द

अफसर	officer	(ऑफीसर)
इंजन	Engine	(एंजिन)
अस्पताल	Hospital	(हास्पिटल)
डाक्टर	Doctor	(डॉक्टर)
कप्तान	captain	(कैप्टन)
थेटर, ठेटर	Theatre	(थियेटर)
मील	Mile	(माइल)
बोतल	Bottle	(बाटल)
टेसन	Station	(स्टेशन)
इस्कूल	School	(स्कूल)
बुकसट	Bushshirt	(बुश्शर्ट)
टीन	tin	(टिन)
पुलिस	police	(पोलिस)
इनिस्पेट्टर	Inspector	(इंसपेक्टर)
कलेट्टर	Collector	(कलेक्टर)

तुर्की शब्द

उर्दू, कब्जाक, काबू, कालीन, कुली, कुर्की, कैंची, चकमक, चमचा, चिक, जुगुल, चेचक, ज़ालिम, तमगा, तलाश, लोप, बहादुर, बेगम, मुगल, लफंगा।

प्रत्यय भी क्रिया का ही बोध कराते हैं, क्रिया बोधक कृदंत प्रत्यय कहलाते हैं।

प्रत्यय	धातु/शब्द	तद्धितान्त
हुए	हँसते	हँसते हुए
हुआ	पढ़ता	पढ़ता हुआ
	चलता	चलता हुआ
	खाता	खाता हुआ
	पीता	पीता हुआ

अध्याय – 10

पर्यायवाची शब्द

इसे प्रतिशब्द भी कहते हैं । जिन शब्दों के अर्थ में समानता होती है, उन्हें हम पर्यायवाची शब्द अथवा प्रतिशब्द कहते हैं । हिन्दी में तत्सम पर्यायवाची शब्द ही अधिक पाए जाते हैं जो संस्कृत से हिन्दी में आए हैं । हिन्दी में तद्भव पर्यायवाची शब्दों का अभाव है। कुछ प्रमुख पर्यायवाची शब्दों के उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं -

(अ)

शब्द		**पर्याय**
अमृत	-	पीयूष, सुधा, अमी
अंग	-	अवयव, भाग, हिस्सा, अंश, खंड ।
अग्नि	-	आग, पावक, अनल, वहिन, हुताशन, कृशानु, वैश्वानर ।
अनी	-	सेना, फौंज, चमू, कटक, दल।
असुर	-	दनुज, दानव, दैत्य, राक्षस, निशिचर, निशाचर, रजनीचर ।
अरण्य	-	जंगल, वन, कानन, विपिन ।
अश्व	-	घोड़ा, वाजि, हय, घोटक, तुरग ।
अंकुर	-	अँखुआ, कोंपल, कल्ला ,नवोद्भिद्/
अंचल	-	पल्ला, पल्लू, आँचल ।
अंत	-	समाप्ति, अवसान, इति, उपसंहार
अंत	-	फल, अंजाम. परिणाम. नतीजा ।

शब्द		**पर्याय**
अचल	-	पर्वत, पहाड़, गिरि, शैल, स्थावर ।
अचला	-	पृथ्वी, धरती, धरा, भू, इला, अवनी
अतिथि	-	अभ्यागत, मेहमान, पाहुना ।
अधर	-	ओंठ, ओष्ठ, लब, रद-पट, होंठ ।
अनंग	-	कामदेव, मदन, मनोज, मयन, मन्मथ।
अनल	-	'अग्नि' ।
अनाज	-	अन्न, धान्य, शस्य ।
अनिल	-	हवा, वायु, पवन, समीर, वात, मरुत् ।
अनुकम्पा	-	कृपा, मेहरबानी, दया ।
अन्वेषण	-	अनुसन्धान, खोज, शोध, जाँच ।
अपना	-	निज, निजी, व्यक्तिगत ।
अपर्णा	-	पार्वती, शिवा, उमा, भवानी, भैरवी
अपमान	-	तिरस्कार, अनादर, निरादर ।
अप्सरा	-	देवांगना, सुरबाला, सुरनारी, सुरकन्या, देवबाला, देवकन्या ।
अबला	-	नारी, गृहिणी, महिला, औरत, स्त्री
अभय	-	निर्भय, निर्भीक, निड़र, साहसी ।
अभिप्राय	-	तात्पर्य, आशय, मंतव्य ।

(आ)

आँख	-	नयन, नेत्र, लोचन, चक्षु, दृग ।
आम	-	आम्र, रसाल, चूत, सहकार, अमृतफल।

आग - अग्नि' ।
आकाश - व्योम, गगन, अम्बर, नभ, आसमान, अनन्ता ।
आनन्द - मोद, प्रमोद, आमोद, हर्ष, आह्लाद, उल्लास ।
आकांक्षा - अभिलाषा' ।
आँधी - तूफान, अंधड़, बवंडर ।
आर्त - दुखी, उद्वितन, खिन्न, क्षुब्ध, कातर, संतप्त, पीड़ित ।
आर्यावर्त्त - भारत, हिन्द, हिन्दुस्तान, इंडिया ।
आस्था - आदर, महत्व, मान, कद्र ।
आहार - भोजन, खुराक, खाना ।

इ-ई

इंदिरा – कमला, रमा, लक्ष्मी, श्री, विष्णुप्रिया ।
इंदीवर - पंकज, जलज, नीरज, कमल, राजीव, उत्पल ।
इंदु - चाँद, राकेश, चन्द्रमा, सुधाकर, चन्द्र, निशाकर, हिमांशु, सुधांशु, राकापति, विधु, शशि,तारापति, मृगांक।
इच्छा - अभिलाषा' ।
इन्द्रदेवराज - सुरपति, महेन्द्र, मेघराज, पुरन्दर, मघवा, शचीपति, विष्णु ।
इन्द्राणी - शची, पुलोमजा, इन्द्रवधू, इन्द्रप्रिया
इत्यादि - आदि, वगैरह, प्रभृति ।
ईर्ष्या - डाह, जलन, मत्सर, कुढ़न ।
ईश - ईश्वर, प्रभु, परमात्मा, भगवान्, परमपिता, परमेश्वर ।
ईश्वर - ईश'।
ईहा - इच्छा, आकांक्षा, एषणा, ईप्सा, चाह, कामना, स्पृहा, वांछा ।

उ – ऊ

उजाला - प्रकाश, ज्योति, प्रभा, आभा, रोशनी ।
उत्पल - 'इन्दीवर' ।
उत्पत्ति - जन्म, पैदाइश, उद्भव ।
उत्सव – पर्व, आयोजन, समारोह, त्यौहार ।
उत्साह - हौंसला, उमंग, जोश ।
उदधि - सागर, समुद्र, सिन्धु, जलधि, पयोधि, नदीश ।

शब्द पर्याय

उद्यान - उपवन, बाग, बगीचा ।
ऊँचा - उच्च, उत्तुंग, शीर्षस्थ, उन्नत ।

(ऋ-ए-ऐ-ओ-औ)

ऋषि - मनीषी, मुनि, साधु, महात्मा ।
एषणा - 'इच्छा'।
ऐश्वर्य - वैभव, संपन्नता, समृद्धि ।
ओठ - अधर' ।
औरत - स्त्री, वामा, महिला, वनिता, रमणी, अंगना ।

(क)

कमल - पद्म, अरविन्द, सरोज, जलज, कंज, सरसिज, उत्पल, वारिज, नलिन।
कामदेव - अनंग' ।
किरण – अंशु, कट, रश्मि, मयूख, मरीचि ।
कुबेर - धनद, धनाधिप, यक्षराज, किनरेश
कच - कमल' ।
कंचन - स्वर्ण, कनक, हेम, सोना, हिरण्य ।
कच - कुंतल, बाल, अलक, गेसू, केश । कनक-कंचन' ।
कपड़ा - पट, वस्त्र, वसन, अम्बर ।
कपाल – भाल, शीश, मस्तक, सिर ।
कमला - 'इन्दिरा' ।
कलाधर - इन्दु' ।
कवि - रचनाकार, रचयिता, शायर ।
कामना - ईहा' ।
काया - देह, शरीर, गात्र, गात, तन ।
काला - श्याम, कृष्ण, असित, श्यामल ।
किताब - पुस्तक, ग्रन्थ, पोथी ।
किनारा - पुलिन, तट, कूल, तीर, कगार ।
कुच - स्तन, उरोज, उरसिज, चूचुक ।
कुलटा - व्यभिचारिणी, पुंश्चली, स्वैरिणी, छिनाल ।
कुसुम - फूल, पुष्प, सुमन, प्रसून ।
कृष्ण - गोपाल, गोविन्द, माधव, मुरलीधर, मोहन, मुरारि, मधुसूदन, श्याम ।
कोकिल - कोकिला, पिक, श्यामा, कोयल ।
कोप - क्रोध, अमर्ष, रोष ।
कोयल - 'कोकिल' ।

शब्द पर्याय

(क)

कोष - खजाना, निधि, भंडार ।
क्रोध - कोप, रोष, प्रकोप, अमर्ष ।
क्षपा - रात्रि, रात, निशा, यामिनी, रजनी, विभावरी ।
क्षिति - पृथ्वी, मही, धरा, धरणी, धरती, भू, भूमि ।
क्षीर - दूध, पय, गोरस ।

(ख)

खंजन - सारंग, नीलकंठ, कलकंठ, खड़रिच
खग - पक्षी, पंछी, चिड़िया, विहंग, नभचर
खोज - अन्वेषण, शोध, आविष्कार, अनुसंधान।
ख्याति - प्रसिद्धि, यश, नाम ।

English

Chapter – 1

Time And Tenses

Time (समय) और Tense (काल) दोनों ऐसे शब्द हैं जिनमें संबंध होते हुए भी अंतर है।
Time का प्रयोग सामान्य अर्थ में होता है, जबकि Tense का प्रयोग विशेष अर्थ में Verb के form का निरूपण करने के लिए किया जाता है। चलिए नीचे दिए गए उदाहरणों पर हम लोग विचार करते हैं –

1. Veena goes to the market every Sunday.
2. The plane takes off at 5 p.m. tomorrow.
3. He had no money yesterday.

उदाहरण (1) में Simple Present Tense का प्रयोग किया गया है। लेकिन इससे Past, Present, और Future तीनों का बोध होता है, वीणा Past time में प्रत्येक रविवार को जाती है और आशा है कि Future time में भी प्रत्येक रविवार को जाएगी।

उदाहरण (2) में स्पष्ट होता है कि प्लेन (plane) कल 5 बजे शाम को प्रस्थान करेगा। इस वाक्य में भी Simple Present Tense का प्रयोग किया गया है, लेकिन इससे future time का बोध होता है।

उदाहरण (3) में Simple Past Tense का प्रयोग किया गया है, तथा इससे past time का बोध होता है।
ऊपर दिए गए उदाहरणों से यह स्पष्ट होता है कि Verb के Present Tense में रहने पर भी इस पर Present, Past और Future Time का बोध होता है।
अत; Verb के Tense तथा इसके प्रयोग को सावधानी से समझने की जरूरत है सर्वप्रथम एक प्रश्न उठता है कि Tense क्या है? इस प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है :-
Tense : कार्य के समय के मुताबिक Verb के रूप में जो परिवर्तन होता है, उसे Tense कहते हैं।

Kinds of Tense

1. Present Tense (वर्तमान काल)
2. Past Tense (भूतकाल)
3. Future Tense (भविष्य काल)

1. Present Tense : किसी कार्य के वर्तमान समय में होने या करने जैसे- हो रहा है, हो चुका है, या हो गया है तथा एक लंबे समय से होता रहा है, का बोध हो तो उसे Present Tense कहते हैं।
दूसरे शब्दों में - An action which is done at the present time. जैसे -

1.I read a book
मैं पुस्तक पढ़ता हूँ ।
2. I am reading a book
मैं पुस्तक पढ़ रहा हूँ ।
3.I have read a book
मैं पुस्तक पढ़ चुका हूँ।
4.I have been reading a book for an hour
मैं दो घंटे से पुस्तक पढ़ता रहा हूँ।

2.Past Tense : किसी कार्य के बीते हुए समय में होने या करने, हो रहा था, हो चुका था, या हो गया था तथा एक लंबे समय से होता रहा था का बोध हो, तो उसे Past Tense कहते हैं।
दूसरे शब्दों में- An action which is done at the Past time. जैसे -

1. I wrote a letter.
मैं पत्र लिखता था या मैंने पत्र लिखा।
2. I was writing a letter.
मैं पत्र लिख रहा था।
3. I had written a letter.
मैं पत्र लिख चुका था या मैंने पत्र लिखा था
4. I had been writing a letter for two days.
मैं दो दिनों से पत्र लिख रहा था

3. Future Tense : किसी कार्य के आने वाले समय में होने या करने जैसे-हो रहा होगा, होता रहेगा, हो चुका होगा या हो गया होगा तथा एक निश्चित समय से होता आ रहा होगा का बोध हो, उसे Future Tense कहते हैं। जैसे -

1. I shall write a letter.
मैं पत्र लिखूंगा।
2. I shall be writing later.
मैं पत्र लिख रहा हूंगा।
3. I shall have written a letter.
मैं पत्र लिख चुका हूंगा।
4. I shall have been writing a letter.
मैं पत्र लिखता आ रहा होऊंगा।

उपयुक्त उदहारण से यह स्पष्ट होता है कि Present, Past तथा Future Tense के भी चार -चार उपभेद होते हैं।

1. Present Tense

Present Tense के चार उपभेद होते हैं।

1. Present Indefinite Tense /Simple Present Tense (सामान्य वर्तमान काल)
2. Present Continuous / Progressive Tense (अपूर्ण वर्तमान काल / तात्कालिक वर्तमान काल)
3. Present Perfect Tense(पूर्ण वर्तमान काल)
4. Present perfect continuous tense (पूर्णापूर्ण वर्तमान काल / पूर्ण तात्कालिक वर्तमान काल)

I. Simple Present Tense

Structure :

Positive tense :-

Subject +main verb +s/es+Object

Ex-Ram reads books.

Note:- अगर subject singular है (जैसे- he, she, it या किसी व्यक्ति का नाम) तो verb की first form में s या es प्रयोग करेंगें ।

Negative:-

Subject+do/does+not+main verb+Object

Ex- Ram does not read books.

Interrogative:-

Ist type:-

Do/does+subj+not+main verb+Object+?

2nd type :-WH words + Ist type

Ex- Does ram read books?

note:-यदि subject एकवचन(He ,She ,It ,name) होगा तो main verb में s या es लगायेंगे और अगर subject बहुवचन(you ,we,they) होगा तो main verb में s या es नहीं लगायेंगे ।

जैसे :-

ram **reads** books.

they **read** books.

Rule (1): Simple Present Tense का प्रयोग habitual, or regular or repeated action (नियमित या स्वाभाविक कार्य) को express (अभिव्यक्त) करने के लिए किया जाता है। जैसे -

Mukesh goes to bed at 10 P.M.

He always comes here on Sunday.

She reads a newspaper every morning.

Note : सामान्यतः Time expressing Adverbs (समय सूचक क्रिया विशेषण) जैसे -

always, often, sometimes, generally, usually, occasionally, rarely, seldom, never, hardly, scarcely, habitually, daily, everyday, every night, every morning, every evening, every week, every month, every year, once a week, once a day, once a month, twise a day, twice a week, twice a month आदि का प्रयोग habitual, or regular or repeated action को express करने के लिए किया जाता है। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि उपरोक्त Adverbs का प्रयोग होने पर Simple Present Tense का प्रयोग होता है जैसे-

He always comes here at night.

He generally comes here at night.

He usually comes here at night.

He never comes here at night.

Rule (2) : इस Tense का प्रयोग Universal truth (सार्वभौमिक सत्य) principal (सिद्धांत) permanent activities (स्थायी कार्य) को express(अभिव्यक्त) करने के लिए किया जाता है जैसे -

The sun rises in the east.

Two and two makes four.

The Ganges springs from the Himalayas.

Rule (3) : इस Tense का प्रयोग possession (अधिकार) को express (अभिव्यक्त) करने के लिए किया जाता है जैसे -

This pen belongs to me.

I have a car.

He owns a big building.

Rule (4) : इस Tense का प्रयोग mental activity (मानसिक क्रिया कलाप), emotions तथा feelings को express (अभिव्यक्त) करने के लिए किया जाता है। जैसे:-

Note : notice, recognise, see, hear, smell, appear, want, wish, desire, feel, like, love,hate, hope, refuse, prefer, think, suppose, believe, agree, consider, trust, remember, forget, know, understand, imagine, means, mind etc. का प्रयोग mental activity express (अभिव्यक्त) करने के लिए किया जाता है। अत : इन सारे Verbs का प्रयोग Simple Present Tense में होता है ।

Rule (5) : Simple Present Tense का प्रयोग आने वाले समय में होने वाले सुनियोजित कार्यक्रम (fixed programme) तथा सुनियोजित योजना (fixed plan) को (express) (अभिव्यक्त) करने के लिए किया जाता है। इससे future time का बोध होता है। जैसे -

The college reopens in October.

कॉलेज पुनः अक्टूबर को खुलेगा।

He goes to Chennai next month.

प्रधानमंत्री कल यहां आएंगे।

My brother returns tomorrow.

मेरा भाई कल लौटेगा।

Note : इस तरह के वाक्यों में future time expressing Adverbs.

जैसे- Tomorrow, next day, next night, next month, next year, next week, In January, In February, In march ..... on Monday, on Tuesday. .....etc. का प्रयोग निश्चित रूप से रहता है।

Rule (6) : Conditional sentence (शर्त सूचक वाक्यों) में सामान्यतः दो Clauses का प्रयोग होता है। इनमें एक Principal Clause तथा दूसरा subordinate Clause होता है।

He was junior to all his friends.
वे अपने सभी मित्रों में छोटे था ।

Rule (10) :- 'To' का प्रयोग 'पास'/'समीप' के अर्थ में होता है। जैसे-
The girl went to her lover.
लड़की अपने प्रेमी के पास गयी ।
He came to me.
वह मेरे पास आया।

Rule (11) :- "To' का प्रयोग 'के लिए' के अर्थ में होता है। जैसे-
He goes to walk in the morning.
वह सुबह में टहलने जाता है।
My uncle came to see me.
मेरे चाचा मुझे देखने के लिए आये।
Note: Intention (इरादा), purpose (उद्देश्य), restriction (प्रतिबंध) भाव को अभिव्यक्त करने के लिए भी to का प्रयोग होता है। जैसे-
He is to write a letter.(वह पत्र लिखने वाला है)
He has to do this work.(उसे इस कार्य को करना है।)
You will have to appear at the examination. (तुम्हें परीक्षा में शामिल होना होगा।)

(L) Since & For
जब अवधि का उल्लेख हो तो Perfect एवं Perfect Continuous Tense में 'for' का प्रयोग करें।
1. I have eaten nothing for a long time.
2. She has been living here for ten years.
जब शुरुआती समय का उल्लेख हो तो Perfect एवं Perfect Continuous Tense में 'since का प्रयोग करें ।
I haven't seen him since 2009.
Since का प्रयोग 'चुकिं'/ 'क्योंकि' के अर्थ में भी होता है।
Since he drove recklessly, he met with an accident.
Since, because एवं as का Pair 'so' नहीं होता है।
since... (√)
since..... ... So/therefore/x]
as.....(√),
as,.....so / therefore (X)
because... (√)
because.....so/therefore (x)
जैसे: Since I was ill so I could not come.(X)
Since I was ill , I could not come. (V)
नोट: As you sow, so shall you reap
उपरोक्त Phrase में as के साथ so का प्रयोग होता है।
यहाँ as.....so का अर्थ "जैसा. ..... वैसा निकलता है ।
'For' का अर्थ 'के लिए' भी होता है।
जैसे: The police is for our safety.

Chapter – 9

Punctuation

Punctuation (विराम चिह्न) writing का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है जो sentences (वाक्य) का सही अर्थ प्रस्तुत करने में मदद करता है। यह ideas को अलग करने, meaning को स्पष्ट करने और text को व्यवस्थित करने के लिए specific symbols का उपयोग करता है। इस chapter में punctuation marks के rules और उनका उपयोग समझाया गया है, जो 10th-level के students के writing skills को सुधारने में मदद करेगा।

1. Full Stop (.)

Full stop, जिसे period भी कहा जाता है, एक sentence के end को indicate करने के लिए उपयोग होता है।

Rules:

- Full stop का उपयोग एक declarative sentence के end में करें।
  - Example: The sky is blue.
- Abbreviations के बाद full stop लगाएँ।
  - Example: Dr., etc., Mr., Mrs.

2. Comma (,)

Comma का उपयोग एक sentence के elements को अलग करने के लिए होता है, जो इसे अधिक clear और readable बनाता है।

Rules:

- Items की list को separate करने के लिए।
  - Example: I bought apples, oranges, bananas, and grapes.
- Coordinating conjunctions (and, but, or, so) के पहले compound sentences में।
  - Example: I wanted to go, but it started raining.
- Introductory words या phrases को अलग करने के लिए।
  - Example: After the movie, we went to dinner.
- Appositives या extra information को set off करने के लिए।
  - Example: My friend, a skilled guitarist, is performing tonight.

3. Question Mark (?)

Question mark एक sentence के end में लगता है ताकि एक direct question indicate हो।

Rules:

- Interrogative sentences के बाद question mark का उपयोग करें।

- Example: What is your name?
- Indirect questions में question marks का उपयोग न करें।
  - Example: She asked if I was coming. (No question mark)

4. Exclamation Mark (!)

Exclamation mark strong emotion, surprise, या emphasis दिखाने के लिए उपयोग होता है।

Rules:

- Exclamatory sentence के end में इसका उपयोग करें।
  - Example: Wow! That was amazing!
- Formal writing में exclamation marks का अधिक उपयोग न करें।

5. Apostrophe (')

Apostrophe का उपयोग possession दिखाने या contractions बनाने के लिए होता है।

Rules:

- Possession दिखाने के लिए।
  - Example: This is Sarah's book.
- Contractions बनाने के लिए।
  - Example: Don't (do not), it's (it is).
- Plurals के लिए apostrophe का उपयोग न करें।
  - Incorrect: The dog's are barking.
  - Correct: The dogs are barking.

6. Quotation Marks (" ")

Quotation marks का उपयोग direct speech या quotations को enclose करने के लिए होता है।

Rules:

- Direct speech दिखाने के लिए इसका उपयोग करें।
  - Example: She said, "I am happy."
- Short works (stories, articles, poems) के titles को indicate करने के लिए।
  - Example: Have you read "The Road Not Taken"?

7. Colon (:)

Colon का उपयोग एक list, explanation, या quotation introduce करने के लिए होता है।

Rules:

- एक list introduce करने के लिए।
  - Example: You need these items: a pen, a notebook, and a ruler.
- Explanation या elaboration के पहले।
  - Example: He was clear about his goal: to win the competition.
- Quotation के पहले।
  - Example: The teacher said: "Work hard to achieve success."

8. Semicolon (;)

Semicolon का उपयोग closely related independent clauses को connect करने या एक complex list के items को separate करने के लिए होता है।

Rules:

- दो independent clauses को बिना conjunction के join करने के लिए।
  - Example: I wanted to go; however, it was too late.
- एक list के items को separate करने के लिए जो already commas contain करता है।
  - Example: We visited Paris, France; Rome, Italy; and Berlin, Germany.

9. Parentheses (())

Parentheses का उपयोग additional information या asides को include करने के लिए होता है।

Rules:

- Extra information add करने के लिए।
  - Example: The Eiffel Tower (located in Paris) is a famous landmark.
- Abbreviations को clarify या explain करने के लिए।
  - Example: WHO (World Health Organization) announced the new guidelines.

10. Dash (—)

Dash का उपयोग एक thought के break या information को emphasize करने के लिए होता है।

Rules:

- Emphasis या interruption create करने के लिए।
  - Example: She finally realized—after all these years—that she was wrong.
- Emphasis के लिए parentheses को replace करने के लिए।
  - Example: The result—a complete victory—was unexpected.

11. Hyphen (-)

Hyphen का उपयोग words को join करने या syllables को split करने के लिए होता है।

Rules:

- Compound words बनाने के लिए।

अध्याय – 3

प्रकाश का परावर्तन व इसके नियम

- प्रकाशिकी (Optics),भौतिक विज्ञान की वह शाखा जिसके अंतर्गत प्रकाश की प्रकृति एवं प्रकाश के गुणों का विस्तृत अध्ययन किया जाता है।
- प्रकाशिकी की दो शाखाएं होती हैं -
  - किरण प्रकाशिकी
  - तरंग प्रकाशिकी

प्रकाश (light) –

- प्रकाश एक विद्युत चुंबकीय तरंग है ।
- इनसे प्राप्त विद्युत चुम्बकीय स्पेक्ट्रम का एक सूक्ष्म भाग ($4000A^0$ – $7800A^0$) ही मानव नेत्र को वस्तुए दिखाने मे सहायक होता है, जिसे दृश्य प्रकाश कहते हैं।
- प्रकाश ऊर्जा का एक ऐसा रूप है जो नेत्र की रेटिना को उत्तेजित करके हमें दृष्टि संवेदनशील बनाता है तथा इसी के कारण हम वस्तुओं को देख पाते हैं।
- प्रकाश के 7 रंग होते हैं (जिसको हम सामान्यतः समझने के लिए "VIBGYOR" कहते हैं)
  V- violet
  I- Indigo
  B - blue
  G - green
  Y - Yellow
  O- Orange
  R – Red
- प्रकाश वस्तुओं को देखने के काम आता है!
- प्रकाश की तरंगदैर्ध्य 400nm से 700nm होती है
- हमारी आंखें सबसे अधिक संवेदनशील पीले रंग के लिए होती है एवं सबसे कम संवेदनशील लाल व बैंगनी रंग के लिए होती है ।
- प्रकाश का पथ किरण कहलाता है।
- प्रकाश को जब किसी सतह से आपतित किया जाता है तो

तीन प्रकार की प्रक्रिया होती है :-

- प्रकाश का कुछ भाग अवशोषित हो जाता है ।
- कुछ भाग परावर्तित हो जाता है ।
- व शेष भाग अपवर्तित हो जाता है।

प्रकाश की चाल-

- विभिन्न माध्यमों मे प्रकाश की चाल भिन्न-भिन्न होती है।
- निर्वात् या वायु मे प्रकाश की चाल (Speed of Light) सर्वाधिक अर्थात् 3×10^8 मी./से होती है
- जो माध्यम जितना अधिक सघन होता है उसमें प्रकाश की चाल उतनी ही कम होती है।
- प्रकाश की किसी माध्यम मे चाल, $u = c/\mu$ होती है, जहाँ $c = 3 \times 10^8$ मी/से तथा μ माध्यम का अपवर्तनांक (Refractive Index) है
- प्रकाश के वेग की गणना सर्वप्रथम रोमर ने की।
- सूर्य के प्रकाश को पृथ्वी तक पहुचने मे औसतन 8 मिनट 16.6 सेकण्ड का समय लगता है।
- चन्द्रमा से परावर्तित प्रकाश को पृथ्वी तक आने में 1.28 सेकण्ड का समय लगता है।

सूर्यग्रहण-

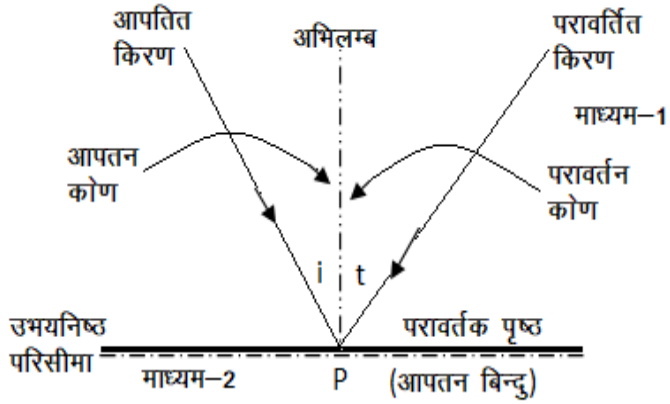
- स्वयं की कक्षा में परिभ्रमण करते समय जब चन्द्रमा, पृथ्वी एवं सूर्य के बीच आ जाता है तो सूर्य का कुछ अंश चन्द्रमा से ढक जाने के कारण पृथ्वी तल से दिखाई नहीं पड़ता है। इस स्थिति को सूर्यग्रहण (Solar Eclipse) कहते हैं।
- यह अमावस्था के दिन होता है।
- सूर्य ग्रहण के समय, सूर्य का केवल कोरोना भाग ही दिखाई देता है।

चन्द्रग्रहण-

- जब पृथ्वी, सूर्य एवं चन्द्रमा के बीच आ जाती है तो सूर्य का प्रकाश चन्द्रमा पर नही पडता है और इस स्थिति मे चन्द्रमा पृथ्वी तल से दिखाई नही पडता है। इस स्थिति को चंद्र ग्रहण (Lunar Eclipse) कहते हैं।
- यह पूर्णिमा के दिन होता है।
- पृथ्वी का कक्ष-तल चन्द्रमा के कक्ष-तल के साथ 5^0 का कोण बनाता है इसलिए चन्द्र ग्रहण हर महीने दिखाई नही देता।

प्रकाश का परावर्तन –

- जब प्रकाश की किरण सतह पर पडती है और समान माध्यम मे वापस लौट जाती है तो यह परिघटना प्रकाश का परावर्तन (Reflection) कहलाती है।



प्रकाश का परावर्तन

- **परावर्तन के दो नियम हैं-**

1. आपतन कोण = परावर्तन कोण अर्थात् $\angle i = \angle r$
2. आपतित किरण, परावर्तित किरण तथा अभिलम्ब तीनों एक ही तल में होती हैं।

परावर्तन के प्रकार :-

- परावर्तन दो प्रकार का होता है :-
  - नियमित परावर्तन
  - विसरित परावर्तन

दर्पण –

- यह कांच की भांति होता है जिसकी एक सतह पॉलिश की हुई होती है।
- दर्पण या आईना एक प्रकाशीय युक्ति है जो प्रकाश के परावर्तन के सिद्धांत पर कार्य करती है

दर्पण दो प्रकार के होते हैं-

- समतल दर्पण
- गोलीय दर्पण।

- किसी भी दर्पण को पानी में डूबोने पर उस की फोकस दूरी पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा क्योंकि फोकस दूरी गोलीय दर्पण की वक्रता त्रिज्या पर निर्भर करती है।
- **समतल दर्पण :-** यदि परावर्तक सतह समतल हो तो वह समतल दर्पण कहलाता है।
- **गोलीय दर्पण :-** गोलीय दर्पण एक खोखले गोले का भाग होता है जिसको काटकर गोलीय दर्पण का निर्माण किया जाता है।
- **गोलीय दर्पण दो प्रकार के होते हैं :-**
  (1) अवतल दर्पण
  (2) उत्तल दर्पण

अवतल दर्पण :- यदि परावर्तन की घटना आंतरिक सतह से होती हैं तो दर्पण अवतल दर्पण कहलाता है।

उत्तल दर्पण :- यदि परावर्तन की घटना बाह्य सतह पर हो तो दर्पण उत्तल दर्पण कहलाता है।

उत्तल दर्पण से प्रतिबिंब निर्माण :-

- उत्तल दर्पण हमेशा आभासी एवं छोटा प्रतिबिंब बनाता है।

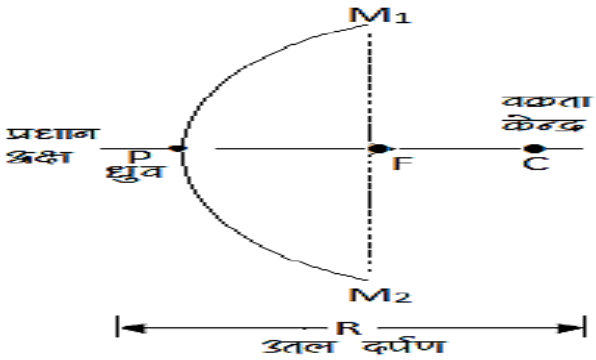
वास्तविक प्रतिबिंब :-

- वास्तविक प्रतिबिंब को पर्दे पर प्राप्त किया जा सकता है।
- वास्तविक प्रतिबिंब दर्पण के सामने बनता है।
- वास्तविक प्रतिबिंब में किरणें मिलती है।
- वास्तविक प्रतिबिंब की आवर्धन क्षमता(m) ऋण आत्मक होती है।

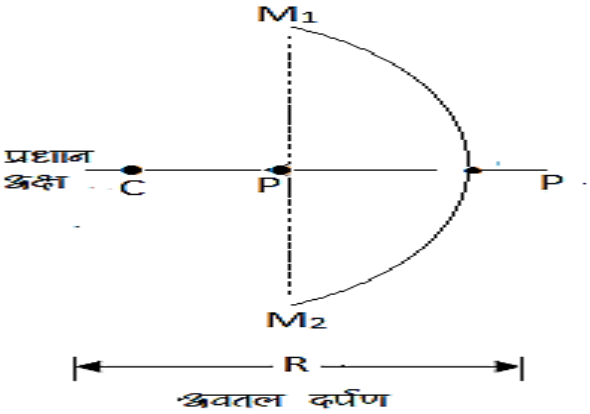
आभासी प्रतिबिंब :

- आभासी प्रतिबिंब को पर्दे पर प्राप्त नहीं किया जा सकता है।
- आभासी प्रतिबिंब दर्पण के पीछे बनता है।
- आभासी प्रतिबिंब में किरण मिलती हुई प्रतीत होती है।
- आभासी प्रतिबिंब की आवर्धन क्षमता(m) धनात्मक होती है।
- **गोलीय दर्पण से परावर्तन :-**
  गोलीय दर्पण वे दर्पण हैं, जिनकी परावर्तक सतह गोलीय होती है। गोलीय दर्पण दो प्रकार के होते है:-

उत्तल दर्पण - ऐसे दर्पण जिनमें परावर्तन उभरी हुई सतह से होता है, उत्तल दर्पण कहलाते है। यह अनन्त से आने वाली किरणों को फैलाता है तथा ये किरणों को अपसारित करता है। अतः इसे अपसारी दर्पण भी कहा जाता है।



अवतल दर्पण (Concave Mirror)- ऐसे दर्पण जिनमे परावर्तन दबी हुई सतह से होता हैं, अवतल दर्पण कहलाते है। इसे अभिसारी दर्पण भी कहा जाता है क्योकि यह अनन्त से आने वाली किरणो को सिकोडता है एवं दर्पण किरणो को अभिसारित करता है।



दर्पण सूत्र(MIRROR FORMULA):

गोलीय दर्पण में वस्तु की ध्रुव से दूरी को वस्तु की दूरी (u) कहते हैं। दर्पण के ध्रुव से प्रतिबिम्ब की दूरी को प्रतिबिम्ब दूरी (v) कहते हैं। मुख्य फोकस की ध्रुव से दूरी को फोकस दूरी (f) कहते हैं। **दर्पण सूत्र** इन तीन राशियों के बीच एक संबंध है जिसे इस प्रकार व्यक्त किया जाता है-

$$\frac{1}{v} + \frac{1}{u} = \frac{1}{f}$$

प्रकाश का अपवर्तन-

- जब प्रकाश एक माध्यम **जैसे**- वायु से दूसरे माध्यम (**जैसे**- काँच) में जाता है तो इसका एक भाग पहले माध्यम मे वापस आ जाता है तथा शेष भाग दूसरे माध्यम में प्रवेश कर जाता है। जब यह दूसरे माध्यम से गुजरता है तो इसकी संचरण दिशा परिवर्तित हो जाती है। यह अभिलम्ब की ओर झुक जाती है या अभिलम्ब प्रकाश से दूर हट जाती हैं। यह परिघटना अपवर्तन (Refraction) कहलाती हैं।
- **अपवर्तन के दो नियम हैं :-**

1. आपतित किरण, आपतन बिन्दु पर अभिलम्ब व अपवर्तित किरण तीनों एक ही तल मे होते हैं।

अफ्रीकन निद्रा रोग

रोगजनक - ट्रिपैनोसोमा गैम्बिएन्स

वाहक-सी-सी मक्खी

लक्षण-रोगी को निद्रा आती है तथा बुखार आता है,तन्त्रिका तंत्र असामान्य हो जाता है ।

काला अजार

रोगजनक -लीशमानिया डोनोवनी, वाहक- **बालू मक्खी**

लक्षण- इसमें रोगी को तेज बुखार आता है तिल्ली एवं यकृत का बढ़ जाना।

बचाव- इसके बचाव हेतू मच्छर दानी का प्रयोग करना चाहिए।

पायरिया

रोगजनक- एन्टअमीबा जिन्जिवेलिस

यह मसूढ़ों का रोग है। इसमें मसूढ़ों से पस निकलता है तथा दांतो से रक्त निकलता है तथा मुहँ से दुर्गन्ध आती है। दांत ढीले होकर गिरते है।

उपचार- पेनीसिलीन का टीका तथा खाने में प्रचुर मात्रा में विटामीन सी होना चाहिए।

असंक्रामक रोग

कैन्सर

कैन्सर एक ग्रीक शब्द कार्कीनोस से बना है जिसका अर्थ- घातक ट्यूमर है

वह बिमारी है जिसमें सामान्य कोशिका की नियमित प्रक्रियाएँ भंग हो जाती है, कोशिकाओं का अनियमित विभाजन होता है व उभरने वाली कोशिकाएँ शरीर के अन्य भागों की ओर गति करती है और एक गांठ का रूप धारण कर लेती है जिसे ट्यूमर कहते है। ट्यूमर के दो प्रकार होते हैं- सूदम व दुर्दम ।

सूदम ट्यूमर - यह कम हानिकारक ट्यूमर है यह जहाँ बनता है उसी स्थान पर रहता है इधर उधर फैलता नहीं है जैसे-मस्सा । यह फिर भी पीड़ाकारी हो सकता है।

दुर्दम ट्यूमर - ये कैंसरकारी ट्यूमर है जिनमें तीव्र विकसित होने की क्षमता होती है क्योकि वृद्धिकारी कोशिकाओं का जीवन काल अनन्त होता है ये रक्त वाहिनियों में रक्त परिसंचरण को प्रभावित करती है और तीव्र गति से हानिकारक बनती जाती है। इसकी कोशिकाएँ रक्त व लसिका के द्वारा शरीर के दूसरे भागों में भी पहुँच जाती है। यहाँ पहुँचकर ये दुसरी गांठों का निर्माण कर लेती है इस प्रकार उस भाग में भी दुर्दम ट्यूमर बन जाते है। इस क्रिया को मेटास्टैसिस कहते है। ये मृत्यु का कारण बनते है। जब ये जीवित भागों के कार्यो में रूकावट डालते है।

कैन्सर के प्रकार - प्रभावित उतकों के आधार पर कैंसर निम्न प्रकार के होते है।

1. **कार्सिनोमास** :- इनकी उत्पत्ति एपीथीलियल ऊतकों जैसे - त्वचा, ग्रथियाँ, आंतरिक अंगों की एपीथीलियल सतह जैसे- म्यूकस, फेफडे., स्तन, आमाशय,मुख, गला, गर्भाशय, सर्विक्स, प्रॉस्टेट आदि से होती है। यह पूर्ण ट्यूमर का लगभग 85 प्रतिशत होता है।
2. **मेलैनोमास** :- ये त्वचीय असीताणूओं व अन्य अंगों से होने वाले ट्यूमर होते हैं। जैसे - श्लेष्मिक मेलानोमा, पिंडाकार मेलानोमा, सतह पर फैलने वाला मेलानोमा आदि।
3. **सार्कोमास** : यह मीसोडर्मल कोशिका की कैंसर युक्त वद्धि है। जैसे- हडिडयाँ, उपास्थि वसा आदि । ये मनुष्य में सम्पूर्ण ट्यूमर का । प्रतिशत होती है । जैसे- हड्डियों का केंसर (ऑस्टियोमा), वसा उतकों का कैंसर (लाइपोमा)।
4. **ल्यूकीमिया** :- यह कैन्सर रक्त एवं अस्थिमज्जा में रक्त कोशिकाओं एवं उनकी पूर्वगामी कोशिकाओं में अनियंत्रित विभाजन द्वारा उत्पन्न होता है। जैसेः- रक्त कैन्सर ।
5. **लिम्फोमास** :- लसिका गाँठ में वृद्धि हो जाती है साथ ही प्लीहा और अन्य लसीका ऊतकों में भी वृद्धि हो जाती है। इसे हाड्किन्स की बीमारी कहते है।
6. **मायोमा** :- पेशी ऊत्तकों का कैन्सर।
7. **ऐडीनोमाः**-ग्रन्थियों का कैन्सर।
8. **ग्लियोमाः** केन्द्रीय तन्त्रिका तन्त्र की ग्लियल कोशिकाओं का कैन्सर ।

कैन्सर के कारण :

- कैंसर उत्पन्न करने वाले कारक सामान्यतः कैंसरजन कहलाते है। ये कैंसरजनी कारक कोशिकाओं में उपस्थित कुछ विशेष जीन्स,ऑन्कोजीन्स को उत्तेजित कर सक्रिय ऑन्कोजीन्स में परिवर्तित कर देते है। सक्रिय ऑन्कोजीन्स के प्रभाव में विभाजनशील कोशिकाएँ अनियंत्रित तथा अनियमित रूप से विभाजित होकर कैन्सर उत्पन्न करती है।
- **नोट** :- ऑन्कोजीन की खोज राबर्ट वीन वर्ग ने की ।
- धूम्रपान,अनेक रासायनिक पदार्थ, पर्यावरणीय कारक,पारिवारिक कारक, विकिरण, एल्कोहल, भोज्य पदार्थो में उपस्थित घटक, विषाणु इत्यादि प्रमुख कैन्सरजनी कारक है। वे रसायन जो कैन्सर उत्पन्न करते है कार्सिनोजन कहलाते है
- जैसे-निकोटिन, कैफीन, मस्टर्ड गैस, आर्सेनिक, कैडमियम ऑक्साइड, ऐस्बेस्टॉस, निकल एंव क्रोमियम, विनाइलक्लोराइड, बैन्जीन, डाइएथिलस्टीबेस्ट्रोल, कोलतार (3,4-बेन्जोपाइरीन), सिगरेट का धुआँ (N - नाइट्रोसोडाइमिथाइलीन), ऐफ्लाटॉक्सिन (फफूंदी का उपापचयी उत्पाद), कैडमियम ऑक्साइड,बैन्जीन आदि।
- अर्बुद उत्पन्न करने वाले विषाणु ऑन्कोवायरस कहलाते है।
- धुम्रपान एवं मद्यपान के अलावा भारत में कुपोषण भी कैन्सर के फैलने का कारण है। भोजन में विटामिन -ए तथा लौह तत्व की कमी कैन्सर का एक प्रमुख कारण है।

जेटाबाइट- एक जेटाबाइट 1024 एक्साबाइट या 270 बाइट्स के बराबर होती है ।

मैमोरी की इकाइयाँ (Units of Memory)

1 बिट्	बाइनरी डिजिट
8 बिट्स	1 बाइट= 2 निबल
1024 बाइट्स	1 किलोबाइट (1 KB)
1024 किलोबाइट	1 मेगाबाइट (1 MB)
1024 मेगाबाइट	1 गीगाबाइट (1 GB)
1024 गीगाबाइट	1 टेराबाइट (1 TB)
1024 टेराबाइट	1 पेटाबाइट (1PB)
1024 पेटाबाइट	1 एक्साबाइट (1 EB)
1024 एक्साबाइट	1 जेटाबाइट (1 ZB)
1024 जेटाबाइट	1 योटाबाइट (1 YB)
1024 योटाबाइट	1 ब्रोण्टोबाइट (1 Bronto Byte)
1024 ब्रोण्टोबाइट	1 जीओपबाइट (Geop Byte)

अध्याय - 3

इनपुट और आउटपुट युक्तियां
(Input and output device)

कम्प्यूटर और मनुष्य के मध्य सम्पर्क (Communication) स्थापित करने के लिए इनपुट-आउटपुट युक्तियों का प्रयोग किया जाता है। इनपुट युक्तियों का प्रयोग कम्प्यूटर को डेटा और निर्देश प्रदान करने के लिए किया जाता है।

इनपुट डेटा को प्रोसेस करने के बाद, कम्प्यूटर आउटपुट युक्तियों के द्वारा प्रयोगकर्ता को आउटपुट प्रदान करता है। कम्प्यूटर मशीन से जुड़ी हुई सभी इनपुट-आउटपुट यूक्तियों को पेरीफेरल युक्तियाँ भी कहते हैं ।

इनपुट युक्तियाँ (Input Devices)

वे युक्तियाँ, जिनका प्रयोग उपयोगकर्ता के द्वारा कम्प्यूटर को डेटा और निर्देश प्रदान करने के लिए किया जाता है, इनपुट युक्तियाँ कहलाती हैं । इनपुट युक्तियाँ उपयोगकर्ता से इनपुट लेने के बाद इसे मशीनी भाषा (Machine Language) में परिवर्तित करती हैं और इस परिवर्तित मशीनी भाषा को सीपीयू के पास भेज देती हैं।

कुछ प्रमुख इनपुट युक्तियाँ निम्न हैं-

1. **कीबोर्ड (Keyboard)**

कीबोर्ड एक प्रकार की मुख्य इनपुट डिवाइस है। कीबोर्ड का प्रयोग कम्प्यूटर को अक्षर और अंकीय रूप में डेटा और सूचना देने के लिए करते हैं। कीबोर्ड एक सामान्य टाइपराइटर की तरह दिखता है, इसमें टाइपराइटर की अपेक्षा कुछ ज्यादा कुंजियाँ (Keys) होती हैं । जब कोई कुंजी कीबोर्ड पर दबाई जाती है तो कीबोर्ड, कीबोर्ड कण्ट्रोलर और कीबोर्ड बफर से सम्पर्क करता है। कीबोर्ड कण्ट्रोलर, दबाई गई कुंजी के कोड़ को कीबोर्ड बफर में स्टोर करता है, और बफर में स्टोर कोड़ सी पी यू के पास भेजा जाता है। सी पी यू इस कोड़ को प्रोसेस करने के बाद इसे आउटपुट डिवाइस पर प्रदर्शित करता है। कुछ विभिन्न प्रकार के कीबोर्ड जैसे कि QWERTY, DVORAK और AZERTY मुख्य रूप से प्रयोग किए जाते हैं ।

कीबोर्ड में कुंजियों के प्रकार

((Types of Keys on Keyboard)

कीबोर्ड में निम्न प्रकार की कुंजियाँ होती हैं ।

(i) अक्षरांकीय कुंजियाँ (Alphanumeric Keys) इसके अंतर्गत अक्षर कुंजियाँ (A, B....., a, b, c,....., z) और अंकीय कुंजियाँ (0, 1, 2,9) आती हैं।

(ii) अंकीय कुँजियाँ (Numeric Keys) ये कुंजियाँ कीबोर्ड पर दाएँ तरफ होती हैं । ये कुंजियाँ अंकों (0, 1, 2, 9) और गणितीय ऑपरेटरों (Mathematical operators) से मिलकर बनी होती हैं।

(l) वेब एड्रेस (Web Address):-इंटरनेट पर वेब एड्रेस किसी विशिष्ट वेब पेज की लोकेशन को पहचानता है । एड्रेस को URL (Uniform Resource Locater) भी कहते हैं। URL इंटरनेट से जुड़े होस्ट कम्प्यूटर पर फाइलों के इंटरनेट एड्रेस को दर्शाते हैं । टिम बर्नर्स ली (Tim Berners lee) ने वर्ष 1991 में पहला URL बनाया, जो कि वर्ल्ड वाइड वेब पर हाइपरलिंक्स को प्रकाशित करने में स्तेमाल होता है।

उदाहरण:"http://www.google.com/services/index.htm" "http- प्रोटोकॉल आइडेण्टिफायर (Protocol Identifier) www वर्ल्ड वाइड वेब google.com डोमेन नेम / /services/ डायरेक्टरी index.htm वेब पेज

(m) डोमेन नेम (Domain Name)

डोमेन नेटवर्क संसाधनों का एक समूह है, जिसे उपयोगकर्ता के समूह को आवंटित किया जाता है । डोमेननेम इंटरनेट पर जुड़े हुए कम्प्यूटरों को पहचानने व लोकेट करने के काम में आता है । डोमेन नेम सदैव अद्वितीय होना चाहिए। इसमें हमेशा डॉट (.) द्वारा अलग किए गए दो या दो से अधिक भाग होते हैं । उदाहरण- google.com, yahoo.com इत्यादि। डोमेन संगठनों तथा देशों के प्रकार द्वारा व्यवस्थित किए जाते हैं । डोमेननेम में अन्तिम भाग संगठन या देश के प्रकार को अंकित करता है । उदाहरण के लिए

info	सूचना संगठन (Informational Organization)
Com	वाणिज्यिक (Commercial) संस्थान
gov	सरकारी (Government) संस्थान
edu	शैक्षणिक (Educational) संस्थान
mil	सैन्य (Military) संस्थान
net	नेटवर्क संसाधन (Network Resources)
org	गैर लाभकीय संगठन (Non-profit Organization)
in	भारत (India)
fr	फ्रांस (France)
nz	न्यूजीलैण्ड (New Zealand)
uk	यूनाइटेड किंगडम (United Kingdom)

सामान्यत; यदि डोमेन नेम के अन्तिम भाग में तीन अक्षर हैं तो वह संगठन को दर्शाता है, तथा दो अक्षर हैं तो वह देश का दर्शाता है ।

(n) डोमेन नेम सिस्टम (Domain Name System)

यह डोमेननेम को आई पी एड्रेस में अनुवादित करता है। सर्वर्स को पहचानने के लिए डोमेन नेम सिस्टम का प्रयोग होता है। सर्वर्स की ऐड्रेसिंग, नम्बरों पर भी आधारित होती है । उदाहरण - 204.157.54.9 इत्यादि, सभी IP एड्रेसेज हैं।

(o) ब्लॉग्स (Blogs)

यह एक वेबपेज या वेबसाइट होती है, जिसमें किसी व्यक्ति विशेष की राय/सलाह, दूसरी साइटों के लिंक नियमित रूप से रिकॉर्ड होते हैं । किसी भी सामान्य ब्लॉग में टेक्स्ट, इमेज्स व अन्य ब्लागों, वेब पेजों या किसी अन्य टॉपिक से संबंधित मीडिया के लिंक होते हैं, इनमें मुख्य रूप से टेक्सचुअल, कलात्मक चित्र, फोटोग्राफ, वीडियो, संगीत इत्यादि सम्मिलित हैं ।

(p) न्यूज ग्रुप्स (Newsgroups)

यह एक ऑनलाइन डिस्कशन ग्रुप होता है, जिसके अंतर्गत इलैक्ट्रॉनिक बुलेटिन बोर्ड सिस्टम तथा चैट सेसन्स के द्वारा बातचीत करने की अनुमति प्रदान की जाती है। यह न्यूज ग्रुप्स विषयों को उनके पदक्रम में संगठित करने के काम में आता है । जिसमें न्यूज ग्रूप का पहला अक्षर प्रमुख विषय की श्रेणी को व उपश्रेणियाँ उपविषय द्वारा दर्शायी जाती है ।

(q) सर्च इंजन (Search Engine)

सर्च इंजन इंटरनेट पर किसी भी विषय के बारे में संबंधित जानकारियों के लिए प्रयोग होता है । यह एक प्रकार की ऐसी वेबसाइट होती है, जिसके सर्च बार में किसी भी टॉपिक को लिखते हैं, जिसके बाद उससे संबंधित सभी जानकारियाँ प्रदर्शित हो जाती हैं । इनमें से कुछ निम्नलिखित हैं google - http://www.google.comyahoo - http://www.yahoo.com इत्यादि।

इंटरनेट सेवाएँ (Internet Services)

इंटरनेट से उपयोगकर्ता कई प्रकार की सेवाओं का लाभ उठा सकता है, जैसे - कि इलेक्ट्रॉनिक मेल, मल्टीमीडिया डिस्प्ले, शॉपिंग, रियल टाइम ब्रॉडकास्टिंग इत्यादि। इनमें में कुछ महत्त्वपूर्ण सेवाएँ इस प्रकार हैं -

(a) चैटिंग (Chatting)

यह वृहत स्तर पर भी उपयोग होने वाली टेक्स्ट आधारित संचारण है, जिससे इंटरनेट पर आपस में बातचीत कर सकते हैं । इसके माध्यम से उपयोगकर्ता चित्र, वीडियो, ऑडियो इत्यादिभी एक-दूसरे के साथ शेयर कर सकते हैं । उदाहरण- Skype, yahoo, messenger इत्यादि ।

(b) ई-मेल (Electronic-mail)

ई-मेल के माध्यम से कोई भी उपयोगकर्ता किसी भी अन्य व्यक्ति को इलेक्ट्रॉनिक रूप में सन्देश भेज सकता है तथा प्राप्त भी कर सकता है। ई-मेल को भेजने के लिए किसी भी उपयोगकर्ता का ई-मेल ऐड्रेस होना बहुत आवश्यक है, जो कि विश्वभर में उस ई-मेल सर्विस पर अद्वितीय होता है। ई-मेल में SMTP (Simple Mail

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

Dear Aspirants, here are the our results in differents exams (Proof Video Link)

RAS PRE. 2021 - https://shorturl.at/qBJ18 (74 प्रश्न , 150 में से)

RAS Pre 2023 - https://shorturl.at/tGHRT (96 प्रश्न , 150 में से)

UP Police Constable 2024 - http://surl.li/rbfyn (98 प्रश्न , 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6URO

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKjl4nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD - 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
MPPSC Prelims 2023	17 दिसम्बर	63 प्रश्न (100 में से)
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये

whatsapp https://wa.link/0hjokf 1 web.- https://shorturl.at/Q6pjL

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

RAS Pre. 2023	01 अक्टूबर 2023	96 प्रश्न (150 मेंसे)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)
UP Police Constable	17 February 2024 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO